(Q) 33(A) "भारतीय किसान मानसून से जुआ खेलता है" क्या आप इस कथन से सहमत हैं। अपने दृष्टिकोण के समर्थन में प्रमाणित कारण प्रस्तुत कीजिए।

Ans. भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ आबादी का लगभग 70 फीसदी हिस्सा अपनी आजीविका के लिए कृषि क्षेत्र पर निर्भर है। ~~और भारत~~ जबकि 65 फीसदी कृषि जल आवश्यकता की पूर्ति के लिए मानसूनी वर्षा पर निर्भर है।

ऐसे मे भारतीय किसानों के लिए मानसून अहम हो जाता है, क्योंकि जब मानसून सामान्य रहता है फसलों का उत्पादन बढ़ जाता है जबकि खराब मानसून की स्थिति मे किसानों के फसल नष्ट या खराब हो जाते हैं एवं उन्हें ~~उन्हें~~ हानि उठानी पड़ती है।

भारतीय कृषि और मानसून

किसी भी देश की कृषि वहाँ की जलवायु से संबंधित एवं निर्भर होती है। भारत में मानसूनी प्रकार की जलवायु पायी जाती है। भारतीय कृषि पर मानसूनी वर्षा के प्रभाव को हम निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं:-

⇒ देश की 64 प्रतिशत जनसंख्या मुख्यतः कृषि पर आधारित है।

⇒ भारत में अधिकांश किसान जीवन निर्वाही प्रकार की कृषि करते हैं।

⇒ देश ~~के~~ GDP में कृषि का योगदान 18% है

⇒ देश के आर्थिक विकास के निम्न स्तर के कारण अधिकांश कृषि भूमि पर कृत्रिम सिंचाई के साधन उपलब्ध नहीं हो पाते हैं।

⇒ मानसून कृषि के साथ-साथ अर्थव्यवस्था को भी समान रूप से प्रभावित करता है।

⇒ खाद्यान्न के अतिरिक्त कपास, गन्ना, पटसन इत्यादि उद्योग प्रत्यक्ष वर्षा आधारित सिंचाई पर निर्भर है।

⇒ देश के 52 करोड़ पशुओं को चारा उपलब्ध कराने में भी मानसूनी वर्षा का प्रमुख योगदान है।

⇒ मानसूनी वर्षा ~~किसानों की आय~~ कृषि के द्वारा किसानों की आय निर्धारित कर देश के मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों को प्रभावित करती है।

⇒ भारत से होने वाली ~~निर्यात~~ कृषि निर्यात के उत्पादन में भी मानसूनी वर्षा का प्रमुख योगदान होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानसूनी वर्षा भारतीय कृषि एवं अर्थव्यवस्था को ~~[illegible]~~ विभिन्न रूपों से प्रभावित करती है लेकिन भारतीय मानसून एक अनिश्चित एवं अनियमित ~~[illegible]~~ भौगोलिक / मौसमी परिघटना है। ~~[illegible]~~ भारतीय मानसून की प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं :—

⇒ **मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता** :- मानसूनी वर्षा बहुत अनिश्चित प्रकृति की होती है। कभी यह समय के पहले आती है, कभी काफी विलम्ब से। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में इस अनिश्चितता का विशेष प्रभाव पड़ता है।

⇒ **वर्षा की अनियमितता** :- भारत में मानसूनी वर्षा अपनी निश्चित मात्रा से कभी अधिक तथा कभी कम होती है। जिससे बाढ़ तथा सूखे की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

⇒ **वर्षा का असमान वितरण** :- भारत में वर्षा का वितरण समान नहीं है, कहीं (चेरापूँजी) में 1000 cm से अधिक वर्षा होती है तो लेह में 10 cm से भी कम वर्षा होती है।

⇒ **मानसून विच्छेद** - वर्षा ऋतु में मानसूनी वर्षा लगातार नहीं होती बल्कि कुछ अंतराल पर रुक-रुक कर होती है। यह अंतराल कितना लम्बा या छोटा होगा यह अनिश्चित है।

⇒ **वर्षा ऋतु की सीमित अवधि** - भारत को प्राप्त होने वाली मानसूनी वर्षा का 70% से अधिक हिस्सा 3-4 महीने (जून से सितम्बर) तक प्राप्त होती है।

भारतीय मानसूनी वर्षा के उपरोक्त ~~विशेषताओं (प्रक~~ अनिश्चितताओं एवं अनियमितताओं के पीछे ~~कई कारण हैं।~~ कारण यह है कि भारतीय मानसून की उत्पत्ति एवं विकास एक जटिल तंत्र है जो कई भौगोलिक एवं वायुमंडलीय तत्वों पर निर्भर करती है। जैसे

→ जेट स्ट्रीम की उत्पत्ति
→ तिब्बत के पठार के गर्म होने की तीव्रता एवं समय
→ एलनीनो एवं ला नीना
→ ITCZ का स्थानान्तरण इत्यादि।

Scanned with CamScanner

⇒ जेट स्ट्रीम की उत्पत्ति एवं इसका विस्थापन

⇒ ITCZ का स्थानांतरण

⇒ तिब्बत के पठार का गर्म होने की दर

⇒ एल नीनो एवं दक्षिणी विक्षोभन (ESNO) की घटना, ~~इत्यादि~~

⇒ पश्चिमी विक्षोभ

⇒ चक्रवाती दशाएं इत्यादि

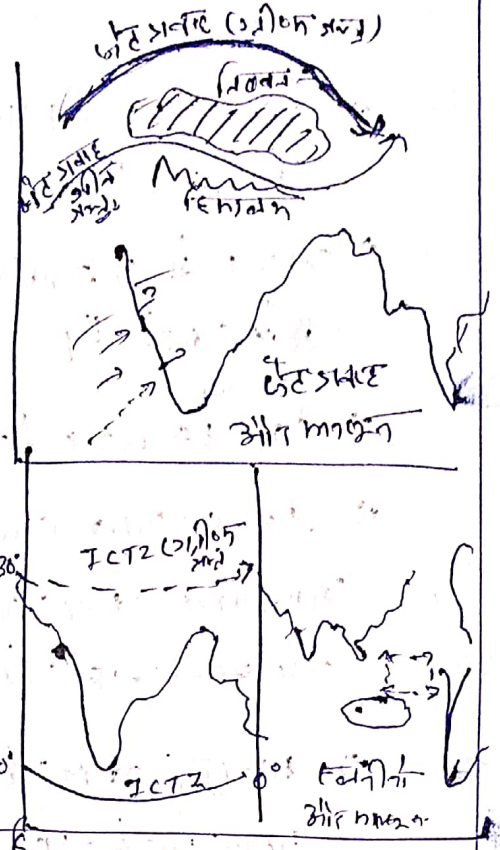

उपरोक्त कारक भारत में मानसून की उत्पत्ति, उसके विकास, उसकी तीव्रता, मानसून विस्फोट, मानसून निवर्तन, इत्यादि को निर्धारित एवं नियंत्रित करती हैं। अतः यह स्वाभाविक है कि इतने विविध भौगोलिक एवं वायुमंडलीय घटनाओं पर आधारित मानसून एक अनियमित व अनिश्चित मौसमी तंत्र है।

निष्कर्ष: भारतीय कृषि एवं अर्थव्यवस्था में मानसूनी वर्षा का एक अतुलनीय योगदान एवं प्रभाव है। लेकिन मानसून की अनियमित व अनिश्चित प्रकृति भारतीय कृषि के उत्पादन एवं फलस्वरूप अर्थव्यवस्था के विकास को मानसूनी जुआ के रूप में परिलक्षित कर देता है। सिंचाई के आधुनिक तरीकों, प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर मानसूनी क्रियाविधि की जटिलता के द्वारा मानसून के नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा...

Scanned with CamScanner

G1-18

(Q-33b) भारतीय कृषि के प्रमुख लक्षणों (Salient feature) का उल्लेख कीजिए तथा इन पर नवीन कृषि तकनीक के प्रभावों की विवेचना कीजिए।

हल

भारत एक कृषि प्रधान देश है तथा कृषि की भारतीय अर्थव्यवस्था में अहम भूमिका है। वर्ष 2011 की जनगणना आँकड़ों के अनुसार देश की लगभग 55 प्रतिशत जनसंख्या कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों से जुड़ी हुई है।

कृषि एक प्राथमिक क्रिया है जिसके अंतर्गत खेती, पशुपालन, मत्स्यपालन व वानिकी जैसे क्रियाकलाप शामिल किए जाते हैं।

भारतीय कृषि देश की लगभग संपूर्ण जनसंख्या को भरण-पोषण करती है तथा कृषि आधारित उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराती है। कृषि के द्वारा लगभग 65 फीसदी आबादी को रोजगार प्राप्त होता है। राष्ट्रीय आय में इसका हिस्सा करीब 18% है।

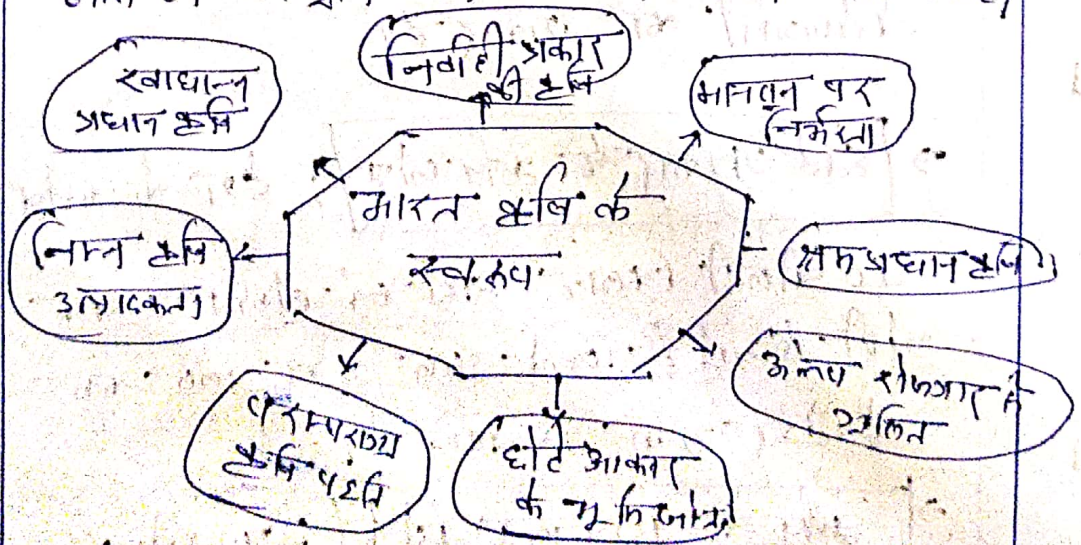

⇒ **निर्वाही कृषि** :- भारत के अधिकांश किसान कृषि केवल अपने खाद्य आपूर्ति के लिए करते हैं न कि व्यावसायिक दृष्टिकोण से।

⇒ **मानसून पर निर्भरता** :- ~~लगभग~~ कृषि का 64 फीसदी अपने जल आपूर्ति के लिए मानसून पर निर्भर है। जबकि भारतीय मानसून की अनिश्चितता एवं अनियमितता कृषि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

⇒ **श्रम प्रधान कृषि** - भारतीय कृषि श्रम प्रधान है। यहाँ कृषि यंत्रों एवं नवीन तकनीकों का बहुत कम प्रयोग किया जाता है।

⇒ **अदृश्य / अल्प बेरोजगारी** : भारतीय कृषि में देश की लगभग आधी से अधिक आबादी जुड़ी है जबकि राष्ट्रीय आय में इसका योगदान मात्र 17.9 % है। अतः ~~अधिक~~ कृषि से जुड़ी अधिकांश श्रम बल अल्प रोजगार या अदृश्य बेरोजगारी का शिकार है।

⇒ **छोटे आकार के कृषि जोत** : देश के करीब 80 फीसदी किसान लघु एवं सीमांत कृषक श्रेणी में आते हैं जिनके पास 2 हे. या उससे कम हेक्टेयर भूमि उपलब्ध है।

⇒ **कृषि के परम्परागत तरीके** : भारतीय किसान परम्परागत कृषि पद्धति के ~~द्वारा~~ द्वारा कृषि करते हैं। कृषि के आधुनिक तकनीकों का कम प्रयोग होता है।

Scanned with CamScanner

[निम्न कृषि उत्पादकता]: प्रति इकाई भूमि उत्पादकता एवं प्रति इकाई श्रमिक उत्पादकता भारत में निम्न है।

[खाद्यान्न प्रधान कृषि]:- भारत के कृषक अधिकांशतः खाद्यान्नों जैसे - चावल, गेहूं, मोटे अनाज के उत्पादन पर जोर देते हैं। व्यावसायिक फसलों जैसे- चाय, मसाले, कॉफी, रबर, कपास, गन्ना इत्यादि पर कम ध्यान दिया जाता है।

भारतीय कृषि के स्वरूपों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारतीय कृषि एक पिछड़ी अवस्था में है जिसके कारण न केवल कृषि उत्पादकता कम है बल्कि भारतीय किसानों की आर्थिक दशा भी काफी दयनीय है। ~~अतः आवश्यकता~~ अतः आवश्यकता है कि नवीन एवं आधुनिक कृषि पद्धति एवं तकनीकों को भारतीय कृषि में शामिल कर भारतीय कृषि के स्वरूप को प्रगतिशील एवं किसानों को खुशहाल बनाया जाए।

इसके लिए निम्नलिखित नवीन कृषि तकनीक लाभकारी हो सकते हैं:-

⇒ <u>बागवानी कृषि पर जोर</u> = द्वारा भारतीय कृषि को खाद्यान्न प्रधान से व्यावसायिक कृषि में तब्दील किया जा सकता है। <u>राष्ट्रीय बागवानी मिशन</u>

⇒ <u>शुष्क कृषि</u>, <u>जैव तकनीक</u> एवं <u>सूक्ष्म सिंचाई योजना</u> की मदद से भारत के [illegible] जैसे [illegible] एवं [illegible] से निजात पाया जा सकता है।

⇒ कृषि के आधुनिक यंत्रों जैसे ट्रैक्टर, थ्रेसर, हार्वेस्टर, फर्टीगेशन यंत्र, सीड कम फर्टी ड्रिल इत्यादि के उपयोग पर जोर

⇒ खाद्य प्रसंस्करण उद्योग का एवं और कृषितर कार्यों जैसे पशुपालन, मत्स्यपालन, डेयरी उद्योग इत्यादि के नवीन तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर कृषि में व्याप्त अल्प रोजगार की समस्या को दूर किया जा सकता है।

⇒ कॉन्ट्रैक्ट फार्मिंग, ~~जैविक कृषि~~, इत्यादि को बढ़ावा देकर छोटे आकार के कृषि जोतों ~~की~~ लाभदायक ~~उत्पादकता बढ़ायी जा सकती है~~ बनाया जा सकता है।

⇒ जैविक कृषि, कृषि में जैव तकनीक, नैनो तकनीक एवं सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ावा देकर कृषि को लाभकारी उद्यम के रूप में तब्दील करने की आवश्यकता है।

⇒ मृदा स्वास्थ्य जाँच, नीम लेपित यूरिया, जैव उर्वरक, आईसीटी जैसे इत्यादि तकनीकों का उपयोग कर कृषि को आधुनिक बनाने की आवश्यकता

इस प्रकार हम देखते हैं कि यद्यपि वर्तमान में भारतीय कृषि निम्न उत्पादकता एवं अलाभकारी कार्य का स्वरूप धारण किए हुए है लेकिन अगर इसमें उपरोक्त तकनीकों का समावेश किया जाए तो इसका स्वरूप अधिक वैज्ञानिक व व्यावसायिक होगी जिससे उत्पादकता में अप्रत्याशित वृद्धि के साथ किसानों की आय में वृद्धि होगी। वर्तमान सरकार इसी दिशा में कार्य कर रही है।